Volume-7, No. 2 Aug.-2020, pp. Hin.05-08

प्राथमिक स्तर पर कार्यरत महिला तथा पुरूष शिक्षकों के तनाव का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. वीरेन्द्र कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर,
शिक्षाशास्त्र विभाग
डी.पी.बी.एस. (पी.जी.) कालिज अनूपशहर बुलन्दशहर उ.प्र. भारत
चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ उ.प्र. भारत।

प्रस्तावना
शिक्षा मानव सभ्यता व समाज का आधार है और अपनी जरूरतों के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था एवं उसके उद्देश्य भिन्न–भिन्न काल खण्डों के अनुसार परिवर्तित होते रहे हैं। किसी राष्ट्र का भविष्य उसकी कक्षाओं में निर्मित होता हैं इन कक्षाओं में पढने वाले विद्यार्थियों का भविष्य निर्माता शिक्षक ही होता है। बालक तो उस कच्ची मिट्टी के समान होता है जिसे एक कुशल कुम्भकार (शिक्षक) अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार रूप प्रदान करता है बालक बगिया के उस फूल के समान होता हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि बालक के ऊपर शिक्षक का पूर्ण प्रभाव होता है। अतः एक शिक्षक से यह उम्मीद की जाती है कि वह बालक पर अपना सर्वोत्तम प्रभाव डाले। अध्यापक को उन सभी बातों का त्याग करना चाहियें जो तुच्छ एवं हीन हो क्योंकि उसी पर समस्त छात्रों की दृष्टि लगी रहती है शिक्षक स्वयं को अपने छात्रों पर अपना प्रभाव डालने से नही बच सकता। इसलिए यह आवश्यक है कि वह सदैव उच्च आदर्शों एवं विचारों को मन, वचन तथा कर्म से व्यवहार में लायें, जिनसे बालकों पर सर्वोत्तम प्रभाव पड़ सके।

मुख्य शब्द– तनाव, शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय।

इस प्रकार हम एक शिक्षक से उच्च आदर्श तथा महान उत्तरदायित्व की अपेक्षा करते हैं। लेकिन यह तभी सम्भव है जब शिक्षक अपनी पूरी ईमानदारी, योग्यता, परिश्रम तथा लगन से अपने कर्तव्यों तथा दायित्व का निर्वहन करे। लेकिन कुछ कारणों से आज शिक्षक अपने उत्तरदायित्व से पीछे हट रहा है तथा वह उच्च आदर्शों के पालन में अपने आप को असफल पा रहा है । शिक्षक छात्रों तथा समाज दोनों की अपेक्षाओं को पूरा करने में खुद को असमर्थ पा रहा है शिक्षक की इस असफलता के पीछे कई कारण हो सकते हैं। लेकिन शोधार्थी ने इस शोध कार्य में इस प्रमुख कारण को लिया है **'शिक्षकों में तनाव'** में आ रही कमी।

मानव एक सामाजिक प्राणी है तथा समाज में हो रहे तीव्र परिवर्तन ने मानव को प्रभावित किया है। आज हम जिस युग में जी रहे हैं। उसमें दिन प्रतिदिन जटिलताएं बढती जा रही हैं। शिक्षक भी इन समस्याओं से अछूता नहीं रह सकता हैं जिस प्रकार जीवन के हर क्षेत्र में तनाव बढ रहा है उसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में भी शिक्षक में तनाव बढ रहा हैं। शिक्षक में तनाव की अधिकता उसके शिक्षण कार्य को प्रभावित करती हैं तनाव की अधिकता के कारण शिक्षक अपना सर्वोत्तम देने में असमर्थ हो जाता है। ये समस्याएं जिन शिक्षकों में पायी जाती हैं उनमें अपने व्यवसाय के प्रति प्रतिकूल तथा अस्वस्थ्य मनोवृत्ति का विकास हो जाता है।

एक प्रभावशाली शिक्षक किसी भी शिक्षण संस्थान की महत्वपूर्ण कुजीं माना जाता है। किसी भी देश के भाग्य का स्वरूप उसके विद्यालयों की कक्षाओं में देखा जा सकता हैं कक्षा का वातावरण अध्यापक के गुण एवं व्यवहार पर निर्भर करता है। शिक्षकों को प्राप्त सामग्री और उनके प्रयोग करने का ढंग अध्यापक के व्यवहार को प्रभावित करता है। लघु शोध में 'प्राथमिक स्तर पर कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों के तनाव का तुलनात्मक अध्ययन' किया है। इन्ही समस्याओं के कारणों का पता लगाने हेतु शोधार्थी ने अध्ययन के रूप में इस समस्या का चयन किया हैं ताकि उसमें सुधार के प्रयास के हो सके और शिक्षकों को इन बुराईयों से दूर रखा जा सके।

मानव समाज एवं देश की उन्नति उत्तम शिक्षकों पर निर्भर है। शिक्षक किसी भी शिक्षण संस्थान का प्रमुख स्तम्भ होता है। ''हुमायूँ कबीर का कथन है कि "वे (शिक्षक) राष्ट्र के भाग्य निर्णायक हैं।'' यह कथन प्रत्यक्ष रूप से सत्य प्रतीत होता है, परन्तु अब इस बात पर अधिक बल देने की आवश्यकता है, कि शिक्षक ही शिक्षा के पुनर्निर्माण की महत्वपूर्ण कुंजी

है। यह शिक्षक वर्ग की योग्यता ही है जो कि निर्णायक है। "हुमायूँ कबीर ने आगे लिखा है कि "शिक्षा पद्धति की कुशलता शिक्षकों की योग्यता पर निर्भर है। अच्छे शिक्षकों के अभाव में सर्वोत्तम शिक्षा पद्धति का असफल होना अवश्यम्भावी है। अच्छे शिक्षकों द्वारा शिक्षा पद्धति के दोषों को भी अधिकांशतः दूर किया जा सकता है।"

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने अपने प्रतिवेदन में लिखा है कि– "अपेक्षित शिक्षा के पुनर्निर्माण में सबसे महत्वपर्ण तत्व शिक्षक– उसके व्यक्तिव गुण, उनकी शैक्षिक योग्यताएँ, उसका व्यावसायिक प्रशिक्षण और उसकी स्थिति जो वह विद्यालय तथा समाज से ग्रहण करता है। विद्यालय की प्रतिष्ठा तथा सामाजिक जीवन पर उसका प्रभाव निःसन्देह रूप से उन शिक्षकों पर निर्भर है जो उस विद्यालय में कार्य कर रहें हैं।"

इस प्रकार शिक्षक का महत्व समाज तथा शिक्षा पद्धति में स्पष्ट है। वस्तुतः शिक्षक उन भावी नागरिकों का निर्माण करता है जिनके ऊपर राष्ट्र के उत्थान एवं पतन का भार है। आदर्श शिक्षक मनुष्यों का निर्माता, राष्ट्र निर्माता, शिक्षा पद्धति की आधारशिला, समाज को गति प्रदान करने वाला आदि सब कुछ माना गया है।

प्राथमिक स्तर पर तो शिक्षक की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। प्राथमिक स्तर के छात्र पूर्णतः शिक्षक पर आधारित होते हैं। शिक्षक छात्रों का निमार्ण करने वाला होता है तथा इस स्तर पर शिक्षक का व्यक्तित्व छात्र को सबसे ज्यादा प्रभावित करता है। अब समय आ गया है जब शिक्षक खुद यह महसूस करें कि उनके विकास में ही छात्र का विकास निहित है। अब आवश्यकता महसूस की जा रही है कि शिक्षक अपने अध्यापन कार्यों का विकास करें।

मानव जीवन दिन प्रतिदिन व्यस्तता की और बढ़ता जा रहा है। व्यस्तता के कारण मानव में तमाम तरह की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं ये समस्याएँ व्यक्ति में तनाव उत्पन्न करने लगते हैं। यह तनाव मनुष्य की प्रमुख मनोवैज्ञानिक समस्या है। मनोवैज्ञानिक तनाव के कारण व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर पड़ जाता है जब एक शिक्षक इन समस्याओं से ग्रसित होता है तो निश्चय ही उसके अध्यापन कार्य में अवरोध उत्पन्न होता है तथा इसके नकारात्मक प्रभाव पड़ने लगते है जिससे शिक्षण कार्य प्रभावित होता है। शिक्षण कार्य में यह कमी शिक्षक में तनाव के कारण हो सकती है।

इस सम्बन्ध में हुए कुछ अध्ययनों के परिणाम यह दर्शाते हैं कि व्यावसायिक तनाव का शिक्षक के कक्षागत व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है बर्निंयूँ ने 1982 के अपने शोध में यह परिणाम पाया कि "उच्च तनाव में अध्यापक छात्रों की आवश्यक्ता को प्रभावशाली ढंग से पूरा नहीं कर पाते है।" तनाव एव प्रतिबल के सम्बन्ध में हुए शोध अध्ययन में डॉ0 टी0सी0 ज्ञानानी 1998 के परिणाम दर्शाते हैं कि "उच्च शिक्षा में संलग्न शिक्षकों के कार्य पर तनाव व प्रतिबल का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।"

उपरोक्त शोध अध्ययनों के परिणाम के आधार पर निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि तनाव से ग्रसित कोई भी अध्यापक सुचारू ढंग से कार्य नहीं कर सकता चाहे वह स्थायी शिक्षक हो या अस्थायी शिक्षक।

यदि वर्तमान शोध अध्ययन के परिणाम स्वरूप यह पाया गया कि महिला एवं पुरूष शिक्षकों के तनाव में अन्तर है तथा तनाव अध्यापन कार्य को प्रभावित करता है तो शिक्षकों की समस्याओं के कारणों को ज्ञात कर इन्हें दूर करने का प्रयास किया जा सकता है, जिससे शिक्षकों में अतिरिक्त तनाव को कम करके उनके शिक्षण कार्य को प्रभावशाली बनाया जा सके तथा उनसे जुडे विद्यार्थी लाभान्वित हो सकें।

समस्या कथन

प्रस्तुत समस्या का शीर्षक **''प्राथमिक स्तर पर कार्यरत महिला तथा पुरूष शिक्षकों के तनाव का तुलनात्मक अध्ययन''** निश्चित किया गया है।

अध्ययन के उदेश्य

1. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शहरी व ग्रामीण पुरूष शिक्षकों के तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शहरी व ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं के तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शहरी पुरूष शिक्षक एवं शहरी महिला शिक्षिकाओं के तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत ग्रामीण पुरूष शिक्षक एवं ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं के तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शहरी व ग्रामीण पुरूष शिक्षकों के तनाव मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शहरी व ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं के तनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।
3. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शहरी पुरूष शिक्षक एवं शहरी महिला शिक्षिकाओं के तनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

4. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत ग्रामीण पुरूष शिक्षक एवं ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं के तनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

प्रयुक्त पदों का परिभाषीकरण

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने कुछ प्रमुख पदों का प्रयोग किया है। शोधार्थी ने इन पदों को निम्न अर्थो में लिया है–

(अ) प्राथमिक विद्यालयः उ0प्र0 सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त प्राईमरी विद्यालयों को प्राथमिक विद्यालय कहा जाता है और इन्हीं प्राईमरी विद्यालयों को शोध में प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के रूप में लिया गया है।

(ब) शिक्षकः प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत सभी महिला एवं पुरूष अध्यापकों को शिक्षक माना गया है।

(स) तनावः तनाव एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जो लोगो में वैसी घटनाओं या परिस्थितियों के प्रति अनुक्रिया के रूप में उत्पन्न होती है, जो हमारे दैहिक एवं मनोवैज्ञानिक कार्यों को विघटित करता है। जब तनाव व्यवसाय के कारण उत्पन्न हो तो उसे व्यावसायिक तनाव कहते हैं।

अध्ययन की परिसीमाएँ

प्रत्येक अध्ययन को कुछ निश्चित सीमाओं में बाँधना पड़ता है अतः इस तथ्यं को दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थी ने अपनी समस्या को निम्नलिखित रूपों में सीमांकित किया है–

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल बुलन्दशहर जनपद के परिषदीय प्राथमिक स्तर पर कार्यरत अध्यापकों पर किया गया हैं।
2. प्रस्तुत अध्ययन में केवल तनाव चर को शामिल किया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में केवल बुलन्दशहर जनपद के प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों में से एक सौ अस्सी शिक्षकों में से 50 शहरी पुरूष शिक्षक, 50 शहरी महिला शिक्षिकाएँ 40 ग्रामीण पुरूष शिक्षक तथा 40 ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया हैं।

बुलन्दशहर जनपद के प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षक		
पुरूष/महिला	शहरी	ग्रामीण
पुरूष	50	40
महिला	50	40
कुल	100	80

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत अध्ययन में छात्र ने विवरणात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया है।

अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने जनपद बुलन्दशहर के प्राथमिक स्तर पर कार्यरत समस्त शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को अपने अध्ययन की जनसंख्या के रूप में लिया है।

प्रतिदर्शन विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने प्रतिदर्श के गुण को ध्यान में रखते हुए स्तरीकृत यादृच्छिक प्रति चयन विधि का प्रयोग किया है, जो सम्भाव्य प्रतिदर्शन का एक प्रकार है।

अध्ययन का प्रतिदर्श

शोधार्थी ने सम्बन्धित जनसंख्या से यादृच्दिक विधि द्वारा 50 शहरी शिक्षकों, 50 शहरी शिक्षिकाओं, 40 ग्रामीण शिक्षकों एवं 40 ग्रामीण शिक्षिकाओं का चयन किया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत लघु–शोध में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं में व्यावसायिक तनाव के मापन के लिए डा0 ए0के0 श्रीवास्तव एवं डा0 ए0पी0 सिंह द्वारा निर्मित 'आक्युपेशनल स्ट्रेश इन्डेक्स' (O.S.I) का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियां–

प्रस्तुत लघु–शोध कार्य में मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं अर्थापन

सारणी संख्या–1

प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शहरी व ग्रामीण पुरूष शिक्षकों के तनाव की तुलना

क्रम स0	समूह का नाम	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थकता स्तर
1	शहरी पुरूष शिक्षक	50	127.880	12.32	3.998	.05
2	ग्रामीण पुरूष शिक्षक	40	139.075	17.68		

सारणी सं 1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि टी का परिकलित मान 3.998 है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा मुक्तांश 88 पर टी परीक्षण के सारणी मान 1.99 से अधिक हैं अर्थात मध्यमानों में सार्थक अन्तर हैं। अत शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती हैं अर्थात प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शहरी पुरूष शिक्षकों एवं ग्रामीण पुरूष शिक्षकों के तनाव में सार्थक अन्तर है।

सारणी संख्या–2

प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शहरी व ग्रामीण महिला शिक्षकों के तनाव की तुलना

क्रम स0	समूह का नाम	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थकता स्तर
	शहरी महिला	50	134.42	8.20	1.199	सार्थक नहीं

	शिक्षिकाएँ					
2	ग्रामीण महिला शिक्षिकाएँ	40	136.70	9.53		

सारणी सं0 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि टी का परिकलित मान 1.199 है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा मुक्तांश 88 पर टी परीक्षण के सारणी मान 1.99 से कम हैं अर्थात मध्यमानों में सार्थक अन्तर नही हैं। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अर्थात् प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शहरी महिला शिक्षिकाओं एवं ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं के तनाव में सार्थक अन्तर नहीं है तथा जो अन्तर परिलक्षित हो रहा है वह प्रतिदर्शजन्य त्रुटि के कारण है।

सारणी संख्या–3

प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शहरी पुरूष शिक्षक एवं शहरी महिला शिक्षिकाओं के तनाव की तुलना

क्रम स0	समूह का नाम	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थकता स्तर
1	शहरी पुरूष शिक्षक	50	49.66	5.93	1.151	सार्थक नहीं
2	शहरी महिला शिक्षिकाएं	50	48.125	6.55		

सारणी सं0 3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि टी का परिकलित मान 1.151 है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा मुक्तांश 88 पर टी परीक्षण के सारणी मान 1.99 से कम हैं अर्थात मध्यमानों में सार्थक अन्तर नही हैं। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अर्थात् प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शहरी पुरूष शिक्षक एवं शहरी महिला शिक्षिकाओं के तनाव में सार्थक अन्तर नहीं है तथा जो अन्तर परिलक्षित हो रहा है वह प्रतिदर्शजन्य त्रुटि के कारण है।

सारणी संख्या–4

प्राथमिक स्तर पर कार्यरत ग्रामीण पुरूष शिक्षक एवं ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं के तनाव की तुलना

क्रम स0	समूह का नाम	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थकता स्तर
1	ग्रामीण पुरूष शिक्षक	40	50.72	4.00	1.868	सार्थक नहीं
2	ग्रामीण महिला शिक्षिकाएं	40	48.87	5.11		

सारणी सं0 4 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि टी का परिकलित मान 1.868 है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा मुक्तांश 88 पर टी परीक्षण के सारणी मान 1.99 से कम हैं अर्थात मध्यमानों में सार्थक अन्तर नही हैं। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अर्थात् प्राथमिक स्तर पर कार्यरत ग्रामीण पुरूष शिक्षक एवं ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं के तनाव में सार्थक अन्तर नहीं है तथा जो अन्तर परिलक्षित हो रहा है वह प्रतिदर्शजन्य त्रुटि के कारण है।

अध्ययन के परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन में परीक्षणों के प्रशासन से प्राप्त आँकडो की सांख्यिकीय विश्लेषण से निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए–

1. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों के तनाव में अन्तर पाया गया।
2. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण शिक्षिकाओं के तनाव में अन्तर नहीं पाया गया।
3. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शहरी पुरूष शिक्षक एवं शहरी महिला शिक्षिकाओं के तनाव में अन्तर नहीं पाया गया।
4. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत ग्रामीण पुरूष शिक्षक एवं ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं के तनाव में अन्तर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर के ग्रामीण शिक्षकों में शहरी शिक्षकों की अपेक्षा अधिक तनाव पाया गया, जबकि शहरी शिक्षिकाओं एवं ग्रामीण शिक्षिकाओं के तनाव में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- आटो, आर0 (1986) अ स्टडी आन टीचर अण्डर स्ट्रेश, मेलबोर्न, हिल ऑफ कान्टेन्ट पब्लिशिंग।
- दलाल एवं कश्यप (2012) ने अपनी पुस्तक ''कोपिंग विद ऑक्यूपेशनल स्ट्रेस एण्ड इट्स मैनेजमेन्ट बाई डिफरेन्ट रिलेक्शेसन टैक्नीक, स्ट्रेस मैनेजमेन्ट : ए मॉडर्न पर्सपेक्टिव'' अनुराधा प्रकाशन, नई दिल्ली, 125–129
- यादव, धनन्जय तथा सिंह भावना (2009) प्रोफेशनल स्किल ऑफ टीचर्स ऑफ स्पेशल स्कूलस, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध।
- अजय शास्त्री (2013) योग प्रशिक्षण का आठवीं कक्षा के छात्रों की स्मृति, समायोजन एवं तनाव पर प्रभाव का अध्ययन, अप्रकाशित पीएच0डी0 शोध प्रबन्ध, शिक्षा विभाग, चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
- रविन्द्र कुमार एवं मोहन गुप्ता (2014) अनुदानित एवं गैर अनुदानित शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन, जर्नल ऑफ इन्टरडिसिप्लिनरी एजुकेशन, खण्ड–2, पृष्ठ 64–68
- कपिल एच. के. (1993) सांखिकीय के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
- डुसाल्ट, एम0 तथा अन्य (1999) प्रोफेशनल आइसोलेशन एण्ड आकुपेशनल स्ट्रेश इन टीचर्स, साइकोलॉजीकल रिपोर्ट, 84 पृ0 943–946।
- नदीम मलिक (2011) ए स्टडी ऑन ऑक्यूपेशनल स्ट्रेस एक्पीरियेन्स बाई प्राईवेट एण्ड पब्लिक बैंक इम्पलोई इन कोटा सिटी, अफ्रीकन जर्नल ऑफ बिजनेस मैनेजमेन्ट, खण्ड–5 (8), पृष्ठ 3063–3070